

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये बालकाण्डे
॥ सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्खहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ सप्तषष्टितमः सर्गः ॥

श्रीरामेण मौर्यमारोप्य धनुषः पूरणे कृते तस्य भङ्गो
रिश्रामित्राञ्जया जनकेन राजानं दशरथमाह्वयितुं मन्त्रिणां
प्रेषणम्

जनकस्य रचः श्रुत्वा रिश्रामित्रो महामुनिः।
धनुर्दर्शय रामाय इति होराच पार्थिवम् ॥ 1.67.1 ॥

ततः स राजा जनकः सचिरान् र्यादिदेश ह।
धनुरानीयतां दिर्यं गन्धमाल्यानुलेपितम् ॥ 1.67.2 ॥

जनकेन समादिष्टाः सचिराः प्रारिषन् पुरम्।
तद्वनुः पुरतः कृत्वा निर्जगुरमितौजसः ॥ 1.67.3 ॥

नृणां शतानि पञ्चाशद् र्यायतानां महाअनाम्।
मञ्जुषामष्टचक्रां तां समुहसे कथञ्चन ॥ 1.67.4 ॥

तामादाय सुमञ्जुषामायसीं यत्र तद्वनुः।
सुरोपमं ते जनकमृचूर्णपतिमन्त्रिणः ॥ 1.67.5 ॥

इदं धनुर्ररं राजन् पूजितं सर्रराजभिः।
मिथिलाधिप राजेन्द्र दर्शनीयं यदीच्छसि ॥ 1.67.6 ॥

तेषां नृपो रचः श्रुत्वा कृताञ्जलिरभाषत।
रिश्रामित्रं महाअनं तारुभौ रामलम्बणौ ॥ 1.67.7 ॥

ইদং ধনূররং ব্রহ্মজনকৈরভিপূজিতম্।
রাজভিষ্চ মহারীরৈরশক্তৈঃ পুরিতং তদা ॥ 1.67.8 ॥

নৈতৎ সুরগণাঃ সর্বে সাসুরা ন চ রাক্ষসাঃ।
গন্ধর্ষক্ষপ্ররাঃ সর্কিন্নরমহোরগাঃ ॥ 1.67.9 ॥

ক্ল গতির্মানুষাণাং চ ধনুষোহস্য প্রপূরণে।
আরোপণে সমাযোগে রেপনে তোলনে তথা ॥ 1.67.10 ॥

তদেতদ্ ধনুষাং শ্রেষ্ঠমানীতং মুনিপুঙ্গর।
দর্শ্যৈতন্মহাভাগ অনযো রাজপুত্রযোঃ ॥ 1.67.11 ॥

বিশ্রামিত্রঃ সরামস্তু শ্ৰুৎরা জনকভাষিতম্।
রংস রাম ধনুঃ পশ্য ইতি রাঘরমব্রবীৎ ॥ 1.67.12 ॥

মহর্ষের্চনাদ্ রামো যত্র তিষ্ঠতি তদ্ধনুঃ।
মঞ্জুষাং তামপারূত্য দৃষ্টরা ধনুরথাব্রবীৎ ॥ 1.67.13 ॥

ইদং ধনূররং দির্যং সংস্পৃশামীহ পাণিনা।
যত্নরাংশ্চ ভরিষ্যামি তোলনে পূরণেহপি রা ॥ 1.67.14 ॥

বাচমিত্যব্রবীদ্ রাজা মুনিষ্চ সমভাষত।
লীলযা স ধনুর্মধ্যে জগ্রাহ রচনান্মুনেঃ ॥ 1.67.15 ॥

পশ্যতাং নৃসহস্রাণাং বহুনাং রঘুনন্দনঃ।
আরোপযৎ স ধর্মায়া সলীলমির তদ্ধনুঃ ॥ 1.67.16 ॥

আরোপযিত্ৱা মৌরীং চ পূরযামাস তদ্ধনুঃ।
তদ্ বভঞ্জ ধনুর্মধ্যে নরশ্রেষ্ঠো মহাযশাঃ ॥ 1.67.17 ॥

তস্য শব্দো মহানাসীন্নির্ঘাতসমনিঃস্বনঃ।
ভূমিকম্পশ্চ সুমহান্ পরতস্যের দীর্ঘতঃ ॥ 1.67.18 ॥

নিপেতুশ্চ নরাঃ সর্বে তেন শব্দেন মোহিতাঃ।
 রর্জযিৎরা মুনিররং রাজানং তৌ চ রাঘরৌ ॥ 1.67.19 ॥

প্রত্যাশ্বস্তুে জনে তস্মিন্ রাজা রিগতসাধ্বসঃ।
 উরাচ প্রাঞ্জলির্রাক্যং রাক্যজ্ঞো মুনিপুঙ্গরম্ ॥ 1.67.20 ॥

ভগরন্ দৃষ্টরীর্ঘো মে রামো দশরথাঅজঃ।
 অত্যদ্বুতমচিন্ত্যং চ অতর্কিতমিদং মযা ॥ 1.67.21 ॥

জনকানাং কুলে কীর্তিমাহরিষ্যতি মে সুতা।
 সীতা ভর্তারমাসাদ্য রামং দশরথাঅজম্ ॥ 1.67.22 ॥

মম সত্যা প্রতিজ্ঞা সা রীর্ষশুল্কেতি কৌশিক।
 সীতা প্রাণৈর্বহমতা দেযা রামায মে সুতা ॥ 1.67.23 ॥

ভরতোহনুমতে ব্রহ্মঞ্শীঘ্রং গচ্ছন্তু মল্লিণঃ।
 মম কৌশিক ভদ্রং তে অযোধ্যাং ঞ্জরিতা রথৈঃ ॥ 1.67.24 ॥

রাজানং প্রশ্নিতৈর্রাক্যৈরানযন্তু পুরং মম।
 প্রদানং রীর্ষশুল্কাযাঃ কথযন্তু চ সর্শঃ ॥ 1.67.25 ॥

মুনিগুপ্তৌ চ কাকুৎস্থৌ কথযন্তু নৃপায রৈ।
 প্রীতিযুক্তং তু রাজানমানযন্তু সুশীঘ্রগাঃ ॥ 1.67.26 ॥

কৌশিকস্ত তথेत্যাহ রাজা চাভাষ্য মল্লিণঃ।
 অযোধ্যাং প্রেষযামাস ধর্মাঅ্মা কৃতশাসনান্।
 যথার্বৃত্তং সমাখ্যাতুমানेतুং চ নৃপং তথা ॥ 1.67.27 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে রাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে বালকাণ্ডে সপ্তষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥